एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 03, अंक: 04 (जुलाई-अगस्त, 2023)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

खरीफ की दलहनी फसलों में कीट व रोगों का नियंत्रण

(*पूजा शर्मा एवं भवानी सिंह मीना)
कीट विज्ञान विभाग, श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय, जोबनेर
*संवादी लेखक का ईमेल पता: poojasharma0377@gmail.com

दलहनी फसलों में लगने वाले प्रमुख कीट मोयला, हरा व सफेद मक्खी : इन कीटों की रोकथाम के लिये मैलाथियॉन 50 ई.सी. या डायमिथेएट 30 ई.सी. एक लीटर या मेलाथियॉन 5 प्रतिशत चूर्ण 25 किलो प्रति हैक्टर की दर से प्रयोग करें।

पत्ती खाने वाले कीट : इन कीटों का प्रकोप होने पर 125 ग्राम ईमामेक्टीन बेन्जोएट 5 एस.जी. या 250–300 मिली इण्डोक्साकार्ब 158 ई.सी. प्रति हैक्टर की दर से छिड़काव करें।

फली छेदक कीट

- दहलनी फसलों मूगं, मोठ, चंवला में फूल आने की अवस्था (30–40 दिन) पर फली छेदक कीट का प्रकोप शुरू हो जाता है। इसकी रोकथाम के लिये फसल की इस अवस्था पर फोरोमोन ट्रेप (5 ट्रेप प्रति हैक्टर) लगाये। फैरोमोन ट्रेप में फली छेदक के 4–6 नर पतंगे पाये जाने पर नियंत्रण उपाय शुरू करें।
- कीट का प्रकोप होने पर क्यूनालफोसं 25 ई.सी. या मोनोक्रोटोफॉस 36 एस.सी. 1 लीटर दवा का प्रति हैक्टर की दर से 400 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

दलहनी फसलों में लगने वाले प्रमुख रोग जीवाणु अंगमारी रोग

- खरीफ में मूगं तथा चंवला में यह रोग जेन्थोमोनास जीवाणु द्वारा फैलता है। इस रोग में छोटे गहरे भूरे रंग के धब्बे पत्तों पर तथा प्रकोप बढ़ने पर फलियों और तने पर भी दिखाई देते है। इससे पौधे मुरझा जाते है।
- इस रोग के लक्षण दिखाई देते ही एग्रीमाइसीन 200 ग्रम या दो किलो ताम्रयुक्त कवकनाशी का प्रति हैक्टर की दर से छिड़काव करे।

पीतशिरा मोजेक (विषाणु) रोग : इस रोग की रोकथाम के लिये रोग का प्रकोप दिखाई देते ही डायगिथोएट 30 ई.सी. एक लीटर दवा का प्रति हैक्टर की दर से या इमिडाक्लोप्रिड 167 मि.ली. 500 लीटर पानी में घोलकर छिड़के। आवश्यकता हो तो 15 दिन के अंतर पर फिर छिड़काव करें। क्योकि यह रोग सफेद मक्खी के कारण फैलता है। इसलिये इसके नियंत्रण हेतु खड़ी फसल में पीला चिप–चिपा पाश 12–15 नग प्रति हैक्टर खेत में लगायें।

छाछ्या (पाउडरी रमिल्ड्यू) रोग : इसमें पत्तियों की ऊपरी सतह पर शुरू में सफेद गोलाकार पाउडर जैसे धब्बे हो जाते हैं तथा बाद में पाउडर सारे तने तथा पत्तियों पर फैल जाता है। पत्तियाँ छोटी रहकर पीली पड़ जाती है। इसकी रोकथाम हेतु प्रति हैक्टर ढ़ाई किलो घुलनशील गंधक 500 लीटर पानी में घोल बनाकर पहला छिड़काव रोग के लक्षण दिखाई देते ही एवं दूसरा छिड़काव 10 दिन के अंतराल पर करें।

पीलिया रोग : फसल में पीलापन दिखाई देते ही 0.1 प्रतिशत गंधक के तेजाब का या 0.5 प्रतिशत फेरस सल्फेट का छिड़काव करें। आवश्यकतानुसार यह छिड़काव दोहराये। छिड़काव हेतु प्रति हैक्टर 500 लीटर पानी की आवश्यकता होगी।